①

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: [illegible] परीक्षा

केन्द्र क्रमांक की सील: केंद्र [illegible] 16001

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 001 परीक्षा का विषय हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/03/09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें — कोड: U-2001 सेट: D

माध्यमिक

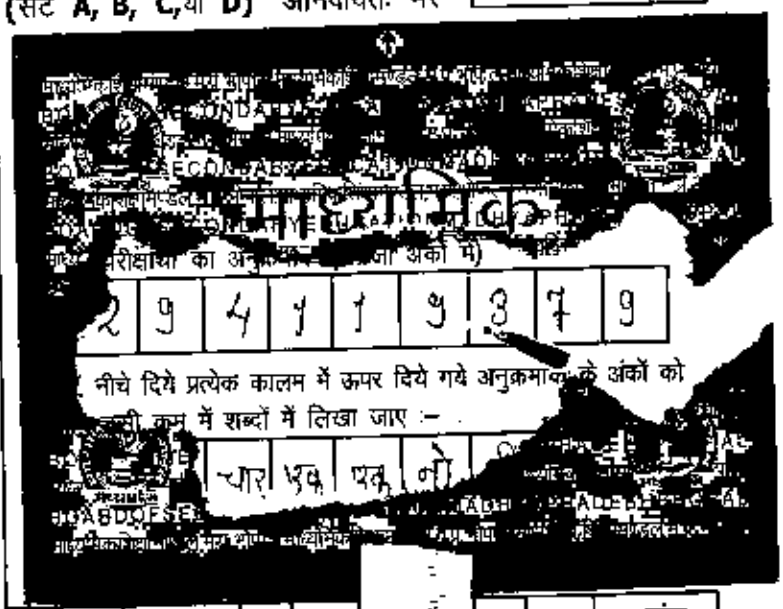

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंकों में)

2	9	4	1	1	9	3	7	9

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को ... क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

... चार एक एक नौ ...

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में X अंकों में X

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 11 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ______

नाम [illegible]

पता / संस्था [illegible]

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B
S
E
M
P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक	प्रश्न	पृष्ठ	प्राप्तांक
1			11			21		
2			12			22		
3			13			23		
4			14			24		
5			15			25		
6			16			26		
7			17			27		
8			18			28		
9			19			29		
10			20			30		

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन के समय सही पाई गई है। अनुक्रमांक स्टीकर चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) ______ हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) ______ हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक) ______

परीक्षक क्रमांक 9257955 दिनांक.............. दिनांक..............

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. [illegible]क्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक कुल अंक

BSEMP

* प्रश्नक्रमांक (1) उत्तर *

(i) गजानन माधव मुक्तिबोध

(ii) आत्मकथा

(iii) शहतूत

(iv) तुलसी

(v) मनोहर की उदण्डता पर

X

* प्रश्नक्रमांक (2) उत्तर *

(i) छायावाद

(ii) जयशंकर प्रसाद

(iii) व्यंग्य

(iv) नवगीत लोकगीत

पृष्ठ के अंकों का योग

(V) जो मंजिल से अनभिज्ञ है

~*~

* प्रश्नक्रमांक (3) उत्तर *

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(V) असत्य

~*~

* प्रश्नक्रमांक (4) उत्तर *

(i) बाल लीला वात्सल्य के चितेरे हैं :- सूरदास

(ii) व्यंग्य की प्रधानता :- भूख

(iii) पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द :- वाक्य

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(iv) प्रताप-पत्र :- फील्ड रखाना

(v) मनोविकार का विवेचन :- नयी कविता

~x~

* प्रश्नक्रमांक (5) उत्तर *

(i) राजरानी देवी

(ii) आसमान को

(iii) कला

(iv) देश के नवयुवकों को

(v) जुगुप्सा

~x~

प्रश्नक्रमांक (6) उत्तर

P.T.O.

BSEMP

डॉ. रघुवीर सिंह द्वारा रचित गद्यकाव्य यशोधरा में लेखक ने यशोधरा की पीड़ा का अत्यन्त सजीव वर्णन करते हुए कहा है कि यशोधरा के ये विरह - वेदना क्या कभी कम हो पाएगी । अर्थात गौतम बुद्ध से क्या कभी उनका मिलन हो पाएगा ।

गौतम बुद्ध यशोधरा को रात के अंधेरे में बिना बताए चिर-सुख की खोज करने हेतू जंगलो में चले जाते है , जिससे यशोधरा जीवन भर के लिए विरह - वेदना से ग्रसित हो जाती है।

लेखक ने अत्यन्त मार्मिक रूप में कहा है कि यशोधरा की ये जो विरह - वेदना से निकलने वाली नि:श्वासे है क्या वे कभी गौतम बुद्ध के लौट आने पर प्यार की बयार में बदलेगी । जिस प्रकार बीता हुआ समय वापस नही आता , जवानी वापस नही आती उसी प्रकार गौतम भी कभी वापस नहीं आयेंगे ।

~X~

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(7)

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 7 के अंक | कुल अंक

प्रश्नक्रमांक (7) उत्तर

महाकाव्य और खण्डकाव्य में अंतर

महाकाव्य	खण्डकाव्य
1. महाकाव्य में कम से कम आठ सर्ग होना आवश्यक है।	खण्डकाव्य में सर्गों की संख्या निश्चित नहीं होती।
2. महाकाव्य का नायक धीरोदात्त तथा महान होना आवश्यक है।	खण्डकाव्य में यह आवश्यक नहीं है।
3. महाकाव्य में सम्पूर्ण जीवन का अंकन होता है।	खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक अंश का वर्णन होता है।
4. महाकाव्य उदात्त शिल्प होता है।	खण्डकाव्य में यह आवश्यक नहीं है।

महाकाव्य - रामचरित मानस - तुलसीदास
खण्डकाव्य - सुदामाचरित - नरोत्तम दास

B S E M P

पृष्ठ का योग

प्रश्नक्रमांक (8) उत्तर

कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित "देखो मालिन मुझे न तोड़ो" के अनुसार विश्व तब झुक जाता है, जब वीर अपने में विश्व को झुकाने का सामर्थ्य रखते है।

विश्व को झुकाने का सामर्थ्य उन वीरो में है, जो अपने पथ पर अडिग रहते है। सामने आने वाली बाधाओं से डरते नहीं अपितु उनका सामना करते है। वही विश्व को झुका सकते है।

वे वीर जो देश रक्षार्थ हेतु अपना बलिदान देने से भी नहीं हिचकिचाते वही विश्व को झुका सकते है। जो देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देते है। भारत माँ को परतन्त्रता की बेड़ियों से छुड़ाने का साहस रखते है वे वीर जो परतन्त्रता से स्वतन्त्रता को बेहतर समझते है वे ही विश्व को झुकाने का सामर्थ्य रखते है।

BSEMP

पृष्ठ के अंक योग

प्रश्नक्रमांक (9) उत्तर

मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित "महत्ता" कविता में भारतवर्ष का महत्व प्रतिपादित करते हुए कवि ने कहा है कि भारत वर्ष स्वर्ग के तुल्य ही है, हम ही ने कई असभ्य देशों को सभ्य बनाया है गिरे हुए तथा मृततुल्य लोगों को जीना सिखाया है।

प्राचीन काल में सभी देशों से लोग भारत वर्ष शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। भविष्य में जब भी प्राचीनता की खोज होगी वे लोग भारतीयों के पदचिन्ह वहां पर पहले से ही पाएंगे।

जो लोग भारतवर्ष को असभ्य बताते हैं, वे या स्वयं अनभिज्ञ हैं अथवा भेदभाव की भावना से ग्रसित हैं।

कवि ने आगे कहा है कि स्वर्ग में देवतागण भी भारत और भारतवासियों (ऋषि, मुनियों) का गुणगान करते हैं तथा समय समय पर देवता भी अवतार लेकर भारत में जन्म लेते हैं अतः स्वयं सिद्ध है कि :-

"भारतवर्ष स्वर्गतुल्य है"

~X~

(10) [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 10 के अंक   कुल अंक

प्रश्न क्रमांक (10) उत्तर

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार निबंध :-

" निबंध वह रचना है, जिसमे एक निश्चित आकार के भीतर किसी विषय का प्रतिपादन एक विशेष निजिपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता के साथ आवश्यक संगति एवं सम्बन्धता के साथ किया जाता है, निबंध कहलाता है।"

हिन्दी निबंध साहित्य को निम्न भागों में वर्गीकृत किया है :-

1 भारतेन्दु युग   सन 1850 से 1900 तक

2 द्विवेदी युग   सन 1900 से 1920 तक

3. शुक्ल युग   सन 1920 से 1940 तक

4. शुक्लोत्तर युग   सन 1940 से अब तक

BSEMP

पृष्ठ के अंक

11

[ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 11 के अंक | कुल अंक

प्रश्नक्रमांक (11) उत्तर

महादेवी वर्मा द्वारा रचित रेखाचित्र "गौरा" में लेखिका ने "आह मेरा गोपालक देश" नि:श्वास छोड़ते हुए कहा है, क्योंकि भारत वर्ष में गाय को माता का दर्जा दिया जाता है खाने बनाते ही पहली रोटी "गाय की रोटी" निकाली जाती है, पत्थरों को भी पूजा जाता है प्राचीन काल से ही भारत देश गाय को पालता आ रहा है, तथा उसकी पूजा करता आ रहा है।

रेखाचित्र "गौरा" में गौरा एक गाय का नाम है, जो भरपूर दूध देती थी। जिसके कारण ग्वाले की बिक्री बंद हो गई थी। फलस्वरूप वह गौरा को खाने में गुड़ के साथ सुई लपेटकर खिला देता है, जिससे उसकी मौत हो जाती है। इस प्रकार जिस देश में एक ओर तो गाय को माँ का दर्जा दिया जाता है वहीं दूसरी ओर अपने स्वार्थ के लिए गाय को मार दिया जाता है। इसी स्थिति को देखकर महादेवी वर्मा के मुंह से नि:श्वास के रूप में शब्द निकलते हैं "आह मेरा गोपालक देश"

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 12 के अंक कुल अंक

प्रश्नक्रमांक (12) उत्तर

साहित्य में काव्य के प्रमुख गुण तीन माने गये हैं
01. - माधुर्य गुण
02. - ओज गुण
03. - प्रसाद गुण

ओज गुण :- जिस काव्य को पढ़ने से मन की भावनाएं उद्दीप्त हो, तथा मन में ओज उत्पन्न हो, वहाँ ओज गुण होता है। ओजगुण में कठोर वर्ण जैसे :- ट, ठ, ण, ड, च, ट आदि तथा संयुक्त वर्णों का उपयोग है। ओज गुण वीर रस, भयानक, वीभत्स आदि रसों में पाया जाता है।

उदाहरण :-
सिंहासन हिल उठे,
राजवंशो ने भृकुटी तानी थी।
बूढ़े भारत में भी आई,
फिर से नई जवानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वो तो,
झांसी वाली रानी थी॥

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

प्रश्नक्रमांक (13) उत्तर

(अ) विभाषा :- विभाषा का स्वरूप बोली से विस्तृत तथा भाषा से कुछ कम होता है। विचारों की अभिव्यक्ति के लिए बोली जाने वाली (ह) भाषा ही विभाषा कहलाती है।

विभाषा की विशेषताएं :-

1. विभाषा सिर्फ बोलने के काम आती है, इसका लिखित रूप नहीं होता है।
2. विभाषा का क्षेत्र सीमित होता है।
3. विभाषा बोली का ही विस्तृत रूप है।
4. विभाषा व्याकरण सम्बन्ध नहीं होती है, इसका कोई साहित्य नहीं होता है।
5. विभाषा सहज, सरल तथा सुबोध होती है।

(ब) (i) प्रश्नवाचक वाक्य :- क्या सत्य की सदा जीत होती है ?

(ii) निषेधवाचक वाक्य :- यह काम मत करिए।

पृष्ठ के अंकों का योग

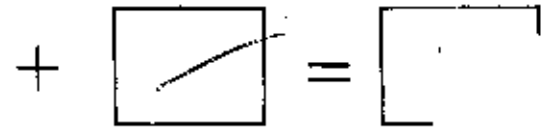

प्रश्नक्रमांक (14) उत्तर

सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"

दो रचनाएं :- परिमल, अनामिका, कुकुरमुत्ता

(a) भावपक्ष :- (i) प्रेम और सौन्दर्य :- निराला जी छायावादी कवि थे, फलस्वरूप उनके काव्य मे प्रेम और सौन्दर्य की अनुभूति है।

(ii) प्रकृति का मानवीकरण :- निराला जी ने प्रकृति मे मानवीय भावो की छाया देखी है।

(iii) नए प्रतीकों का प्रयोग :- निराला ने काव्य मे नए-नए प्रतीकों, प्रवृत्तियों शैलीयों आदि का प्रयोग किया है

(iv) रस सिद्धता :- निराला जी ने श्रृंगार, शांत, वीर सभी प्रकार के रसों मे अपनी रचनाएं की हैं

कला पक्ष :- भाषा :- निराला जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।

BSEMP

(ii) शैली :- निराला जी की शैली प्रतीकात्मक है। तथा उन्होने काव्य की मुक्तक शैली को अपनाया है।

(iii) अलंकार :- निराला जी जब अपना विषय वर्णन शुरु करते हैं, तो अलंकार स्वतः उनके पीछे हाथ जोड़कर पड़ जाते हैं, उपमानों की बारिश होने लगती है, तथा रूपकों की बाढ़ आ जाती है। मानवीयकरण, विशेषण विपर्यय आदि अलंकारों का भी मुख्य रूप से उपयोग किया है।

(iv) छंद :- निराला जी ने नए-नए छंदों का प्रयोग किया है। मुक्तक छंद शैली को अपनाया।, तुकांत तथा अतुकान्त दोनो प्रकार के छंद लिखे।

(ग) साहित्य में स्थान :- निराला जी मुख्य रूप से छायावाद के आधार स्तंभ माने जाते हैं। जब तक निराला जी की प्रेमासिक्त वाणी का सुधा प्रवाह बना रहेगा, तब तक हिन्दू-जीवन की समरसता का स्रोत सूख नही पाएगा।

(16) योग + पृष्ठ 16 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्नक्रमांक (15) उत्तर

डॉ. रघुवीर सिंह

(क) की रचनाएँ :- शेष स्मृतियाँ,
बिखरे फूल।

(ख) भाषा :- डॉ रघुवीर सिंह जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है कहीं-2 उर्दू, फारसी तथा विदेशी शब्दों का भी प्रयोग किया है मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा का सौन्दर्य बढ़ गया है शब्दों का चयन सटीक है भाव और विषय के अनुरूप भाषा होने के कारण भाषा में सजीवता तथा सहजता आ गई है

(ग) शैली :-(i) विचारात्मक शैली :- रघुवीर सिंह जी ने गंभीर विषयों का प्रतिपादन करने के फलस्वरूप विचारात्मक शैली अपनाई है

(ii) चित्रात्मक शैली :- डॉ. रघुवीर सिंह जी ने शब्दों के द्वारा चित्र प्रस्तुत करने वाली चित्रात्मक शैली अपनाई है

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

यो

(ii) वर्णनात्मक शैली :- डॉ. रघुवीर सिंह जी ने अपने कई निबंधो मे वर्णनात्मक शैली अपनाई है। इस शैली मे वाक्य छोटे तथा सटीक होते है।

~x~

प्रश्नक्रमांक (16) उत्तर

हे प्रभु ! - - - - - - - - - - - - - लिये जीऊंगा)

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश सुरेश शुक्ल "चन्द्र" द्वारा रचित एकांकी "तात्या टोपे" से लिया गया है।

प्रसंग :- तात्या टोपे के बजाय एक अन्य वीर को फांसी देने पर तात्या टोपे की प्रतिज्ञा का उल्लेख है।

व्याख्या :- तात्या टोपे, अन्यवीर को फांसी दे देने पर अत्यन्त क्रोधित होते है, तथा प्रतिज्ञा लेते है कि ईश्वर उन्हे शक्ति दे कि वे अंग्रेजो से उस वीर की मृत्यु का बदला ले सके। तात्या जी आगे कहते है कि अब मुझे अंग्रेजो की जमीन की धूल

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

चटानी है। अब मुझे मृत्यु की देवी रणचण्डी को इस धरती पर बुलाना है। अर्थात अंग्रेजों को मृत्यु के घाट उतारना है और उस परमात्मा अर्थात उस वीर की जो उनके स्थान पर फाँसी पर चढ़ा दिया गया, आत्मा को शान्ति प्रदान करनी है उस वीर की आत्मा को तभी शान्ति मिलेगी जब अंग्रेजों का संहार करेंगे।

तात्या जी आगे प्रतिज्ञा लेते हुए कहते हैं कि मैं जब तक उस वीर की मृत्यु का बदला नहीं लूँगा तब तक सन्यासी के वेश में रहूँगा अर्थात सभी सुखों से दूर रहकर अंग्रेजों का विनाश करूँगा। वे कहते हैं, कि मैं जीवन भर दुःखों का ही वरण करूँगा अर्थात कई प्रकार के कष्टों को सहूँगा। परन्तु अंग्रेजों को परास्त करने का गुरुतर अर्थात सर्वोत्तम कार्य अवश्य करूँगा। अभी तक तो मैं स्वयं के लिए ही सभी के लिए कार्य करता आया हूँ, परन्तु अब मैं उस वीर और राष्ट्र को ही समर्पित हूँ।

विशेष :- (i) भाषा सरल एवं सुबोध है।
(ii) तात्या टोपे की प्रतिज्ञा का ओजपूर्ण वर्णन।
(iii) ऐतिहासिकता का वर्णन।

BSEMP

प्रश्नक्रमांक (17) उत्तर

बानी जग-रानी - - - - - - - - - - नई-नई ।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश केशवदास द्वारा रचित "वंदना" से लिया गया है।

प्रसंग :- केशवदास जी ने माँ सरस्वती की उदारता का वर्णन किया है।

व्याख्या :- केशवदास जी माँ सरस्वती की वंदना करते हुए कहते हैं कि इस संसार में ऐसी बुद्धि किसी भी पास नहीं है, जो कल्याणकारी माँ सरस्वती की उदारता का वर्णन कर सकता है अर्थात माँ सरस्वती में अपार उदारता समाई है जिसका कोई बखान नहीं कर सकता।

देवता, ऋषि-मुनि, तपवृद्ध, प्रसिद्ध योगी आदि सभी माँ सरस्वती की उदारता का वर्णन करते-करते थक गए परन्तु कोई भी उनका वर्णन नहीं कर पाया।

भविष्य, वर्तमान और भूतकाल को जानने वाले भी माँ सरस्वती का बखान करने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं।

जिस माँ सरस्वती के पति चतुर्मुख अर्थात परमब्रह्म हो, जिसके

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

पुत्र पाँच मुख वाले अर्थात् भगवान शंकर हो, तथा जिसके वाहन जाली छः मुख वाले अर्थात् हंसराज हो उन माँ सरस्वती की उदारता का बखान करना अत्यन्त कठिन कार्य है।

विशेष :- (i) ब्रजभाषा का प्रयोग है।
(ii) सरस्वती की उदारता की सूरत बताया है।
(iii) उपमानो का प्रयोग किया है।

~×~

प्रश्नक्रमांक (19) उत्तर

(i) शीर्षक :- शिक्षा

(ii) सारांश :- पुराने समय में शिक्षा पद्धति आज की शिक्षा पद्धति से कई गुना अच्छी थी। पुराने समय में शिक्षा के साथ अन्य व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाता था, परन्तु आज शिक्षा प्रणाली एकांकी है।

(iii) अंग्रेजी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य भौतिकता वादी युग की चाह तथा सुख पाना था। उसमें व्यावहारिकता का अभाव था, तथा वह एकांकी थी।

~×~

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

प्रश्नक्रमांक (18) उत्तर

सेवा में,
पुलिस अधीक्षक,
मंदसौर।

विषय :- चोरी की घटनाओं से अवगत कराने हेतु।

महोदय,
आपका ध्यान जनता कॉलोनी क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन घट रही चोरी की वारदातों की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। जनता कॉलोनी क्षेत्र में पिछले तीन सप्ताह में पाँच चोरी की वारदात हो चुकी है।
अतः आपसे सविनम्र निवेदन है कि आप इस तरह की घटनाओं पर विशेष ध्यान देकर उन्हें रोकने हेतु पुलिस गश्त बढ़ाने का कष्ट करें।

सधन्यवाद
दिनांक 12/03/09

आपका आज्ञाकारी
xyz
जनता कॉलोनी मंदसौर

-x-

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का ...

प्रश्नक्रमांक (२०) उत्तर

राष्ट्रीय एकता

रूपरेखा।

1. प्रस्तावना
2. राष्ट्रीय एकता के आवश्यक तत्व
3. अनेकता में भी एकता, भारत की विशेषता।
4. राष्ट्रीय एकता से लाभ
5. उपसंहार

> "सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा,
> हम बुलबुले है इसकी, ये गुलसिता हमारा।

प्रस्तावना :- उपर्युक्त कोटेशन से स्पष्ट है कि हमारा भारत सारे जहां से अच्छा है। और इसके पीछे एक ही कारण है, वह वह भारत की एकता। राष्ट्रीय एकता से तात्पर्य उस एकता से है जो भारत वासियों के आपसी मेल-जोल तथा विभिन्न कार्यों में परिलक्षित होती है

राष्ट्र में व्याप्त एकता जो विभिन्न समुदायों तथा धर्म-भेद, भाषा, रंग-रूप आदि की विविधता वाले देशों में पाई जाती है, उसे ही राष्ट्रीय एकता कहते हैं।

2. राष्ट्रीय एकता के आवश्यक तत्व :-

> "मजहब नहीं सिखाता,
> आपस में बैर रखना।
> हिन्दी हैं हम, हिंदी है हम,
> वतन है, हिंदोस्तां हमारा।"

राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे आवश्यक तत्व है, वहाँ के लोगों का उदार होना। एक देश में जितने उदारवादी लोग होंगे वहाँ उतनी ही राष्ट्रीय एकता पाई जाएगी। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि वहाँ की राजनीतिक पार्टियों में एकता हो। वही एकता स्थापित करने वाले साधन है।

3. अनेकता में भी एकता भारत की विशेषता :-

भारत की राष्ट्रीय एकता का एक कारण यह भी है कि यहाँ अनेकता में भी एकता विद्यमान है।

BSEMP

"अंधकार है वहाँ,
जहाँ आदित्य नहीं।
मुर्दा है वह देश
जहाँ एकता नहीं॥"

4. राष्ट्रीय एकता से लाभ :- जिस देश में एकता व्याप्त होती है, दूसरे सभी देश उस देश का सम्मान भी करते हैं, तथा उससे डरते भी है देश का विकास तीव्र गति से होता है तथा वह देश प्रगति के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ता है देश में शांति बनी रहती है दुश्मनो से टकराने की शक्ति बढ़ती है।

5. उपसंहार :- अंत में मैं बस यही कहना चाहूँगी कि हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम अपनी राष्ट्रीय एकता को बनाए रखेंगें। तथा इसमें जो भी बाधा होगी उसे दूर करने का पूरा प्रयत्न करेंगें। राष्ट्र की एकता हेतु यदि प्राणों की बाजी भी लगाना पड़े तो नहीं चूकेंगें। राष्ट्र की एकता से ही हमारी प्रगति होगी। तथा राष्ट्र की प्रगति का मार्ग सुनिश्चित होगा।

BSEM